पं.क्र. (04/21/05/207665/19)

अन्तरा शब्दशक्ति
प्रकाशन एवं बहुउद्देशीय संस्था
www.antrashabdshakti.com

शब्द
से संवेदना तक...
लेखन से
परिवर्तन तक...

हिन्दी
हमारी पहचान
हमारी शक्ति

'समसामयिक प्रश्नों पर आपकी कलम'

(लेख प्रतियोगिता)

विचार...
चिंतन...
संवाद...
और
एक बेहतर
कल की ओर...

समाज
विकास
शिक्षा
पर्यावरण
युवा
मूल्य
राजनीति
महिला
संस्कृति
समाधान

समाज
साहित्य
संस्कृति
विकास
नई पीढ़ी
बेहतर कल

विचारों की
स्याही से
बदलता समाज...

रचनाकार :-
गिरिजेंद्र वर्मा

आयोजक:-
अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
वारासिवनी (म.प्र.)

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)

अन्तरा शब्दशक्ति

प्रकाशन एवं बहुददेशीय संस्था
www.antrashabdshakti.com

कलम की शक्ति, समाज की दिशा

हिन्दी
हमारी पहचान
हमारी शक्ति

शब्द से संवेदन तक...
लेखन से परिवर्तन तक...

संपादक : डॉ. प्रीति समकित सुराना
तकनीकी संपादक : Webcoodee.com
मुख्य कार्यालय : 15 नेहरू चौक, वारासिवनी,
जिला बालाघाट (म.प्र.) 481331

Antrashabdshaktiprakashan

संपर्क : 9009423393
ईमेल : antrashabdshakti@gmail.com
वेबसाइट : www.antrashabdshakti.com

वैधानिक सूचना

पुस्तक में प्रकाशित सभी रचनाएँ संबंधित रचनाकारों की मौलिक अभिव्यक्तियाँ हैं। प्रत्येक रचना में व्यक्त विचार, कथ्य एवं अभिमत के लिए संबंधित रचनाकार स्वयं उतरदायी हैं। रचनाओं के चयन एवं प्रकाशन का उद्देश्य साहित्यिक अभिव्यक्ति को मंच प्रदान करना एवं हिन्दी लेखन को प्रोत्साहित करना हैं।

हिन्दी
से ही है
पहचान...

विचार...
संवाद...
समाज...
और एक बैहतर कल...

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com
प्रकाशन एवं बहुद्देशीय संस्था

लेख प्रतियोगिता

लेखक/लेखिका – गिरिजेंद्र वर्मा

टाइटल: कॉकरोच से कारवां तक

टाइटल: कॉकरोच से कारवां तक

देना थी तो गालियां ही देते। हम ठहरे बेरोजगार, हम ठहरे आलसी, हम ठहरे मोबाइल धारक, हम ठहरे आरक्षण के मारे, हम ठहरे गहरे पानी में फेंका हुआ पत्थर। तुम्हारी आत्मा को शायद सुकून मिला हो। पर तुम्हारे इस बयान ने प्रजातंत्र में नई जान फूंक दी।

याद दिला दी जेनेरेशन-जेड की क्रांति, याद दिला दिया भगत सिंह, सुखदेव, खुदीराम बोस। याद दिला दिया नेपाल का जनआंदोलन। सामान्य न्यायपालिका के शिखर पर बैठे जस्टिस साहब का एक बयान हिंदुस्तान ही नहीं, पूरी दुनिया में कोहरा मचा देगा, ये किसी को अंदेशा न था।

ठेठ मजाकिया लहजे में शुरू हुआ "कॉकरोच" का सफर, महज कुछ घंटों में कारवां बन गया। सरकारी पदों पर बैठकर उलूल-जुलूल बयान कितना भारी पड़ सकता है, ये सरकार की जान हलक में अटकाने को काफी है। शीर्ष पर बैठे नौकरशाह ने ऐसी भूल की कि अब न हड्डी निगल पा रहे हैं, न उगल पा रहे हैं।

मर्यादा की बाड़ लगाकर सीमाएं बांधी जा सकती हैं, पर तूफानों को आने से कोई नहीं रोक पाया। हमारी रगों में बहता खून भूल नहीं है। असम के युवाओं का वो आंदोलन याद है, जिसमें छात्र नेता प्रफुल्ल कुमार महंत सीधे मुख्यमंत्री बन गए। जेपी आंदोलन याद है, जिसने इंदिरा जी की कुर्सी हिला दी। अरब स्प्रिंग याद है, जहां एक फल बेचने वाले के आत्मदाह ने पूरी सरकारें हिला दीं।

माना, युवा आलसी है, काम की तलाश में भटक रहा है, स्टेटस से नीचे जी नहीं पा रहा। पर युवा जिंदा है, मरा नहीं है। सड़कों पर उतरकर अपने वाजिब हक मांग रहा है। तुम्हारी नजर में वो कॉकरोच हो सकता है, पर अपने माता-पिता का लाडला है, अपने बच्चों का पिता है, अपनी पत्नी का श्रृंगार है। इसी कॉकरोच पर टिकी है परिवार की उम्मीद, परिवार की जिम्मेदारी। ये कॉकरोच न होते तो बहुमतों के लाले पड़ जाते।

आज समझ आया कि सर्वोच्च पदों पर बैठे लोगों के एक-एक शब्द का क्या मायने होता है। सोशल मीडिया बंद करने का फैसला लेना पड़ रहा है, पर चिंगारी भड़क चुकी है। यद्यपि कॉकरोच का कारवां कल खत्म हो जाए, पर इतिहास के सुनहरे पन्ने पर ये पांच दिन हमेशा अंकित रहेंगे।

माननीय महोदय, आप पर आरोप लगाना अपराध है। संयम बरतना कानून सिखाता है। पर खामोशी कभी इतिहास नहीं बनती। कॉकरोच को करना था, वो कर चुका। अब उसे मिटाने का कोई नया नुस्खा लाइए। सृष्टि के जन्म से कॉकरोच और मनुष्य में अघोषित युद्ध है। काला हिट, लाल हिट मारिए, पर कॉकरोच मरता नहीं, डर मिटता नहीं।

अंततः यही कि मैं अकेला चला था मंजिल की ओर, पर कॉकरोच साथ आते गए और कारवां बनता गया।

- गिरिजेंद्र वर्मा

लेखक परिचय

नाम – गिरिजेंद्र वर्मा

निवास – उदयनगर, जिला देवास, मध्य प्रदेश

अन्तरा शब्दशक्ति
प्रकाशन

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com
प्रकाशन एवं बहुद्देशीय संस्था

कलम की शक्ति, समाज की दिशा

सम्मान-पत्र

यह प्रमाणित किया जाता है कि

आ.....**गिरिजेंद्र वर्मा**.....जी

ने हिन्दी पखवाड़े के अवसर पर आयोजित "**एक लेख प्रतियोगिता**" में उत्साहपूर्वक सहभागिता करते हुए **समसामयिक विषय पर अपने विचारों को** प्रभावी एवं सार्थक ढंग से अभिव्यक्त किया।

उनकी साहित्यिक **अभिव्यक्ति** एवं रचनात्मक सहभागिता की सराहना करते हुए **अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन** की ओर से यह **सम्मान-पत्र** सादर प्रदान किया जाता है।

आपकी सृजनशीलता एवं साहित्यिक यात्रा के उज्ज्वल भविष्य की हार्दिक शुभकामनाएँ।

हिन्दी विचारों को विस्तार देती है... समाज को जोड़ती है...

हिंदी
हमारी पहचान...
हमारी शक्ति...

प्रीति सुराना
समकित सुराना

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन एवं संस्था
डॉ. प्रीति समकित सुराना

शब्द से संवेदन तक... लेखन से परिवर्तन तक...